जब दिल ही टूट गया ...से लेकर ए काश कि हम होश में...

डॉ. विजय सुखवानी
लेखक, मोटिवेशनल स्पीकर
v1sukhwani@gmail.com

दोस्तों, क्या आप यक़ीन करेंगे कि वर्ष 1946 की फ़िल्म शाहजहाँ का के एल सहगल साहब का गाया हुआ अमर गीत जब दिल ही टूट गया हम जीकर क्या करेंगेऔर उसके 48 साल बाद, वर्ष 1994 में आई फ़िल्म कभी हाँ कभी ना का सुपरहिट गीत, ऐ काश कि हम होश में अब आने ना पाएं, एक ही गीतकार ने लिखे हैं, जी हाँ यकीन करना तो मुश्किल है मगर ये सच है और पांच दशक लम्बे करियर वाले वो सदाबहार गीतकार हैं महान शायर और गीतकार मजरूह सुल्तानपुरी साहब.

हिन्दी फ़िल्म संगीत के इतिहास में मजरूह सुल्तानपुरी का नाम उन चुनिंदा शायरों में लिया जाता है जो उर्दू के शायर के रूप में तो प्रसिद्ध हुए ही, साथ ही हिन्दी फ़िल्मों में गीतकार के रूप में भी उन्होंने असाधारण ख्याति प्राप्त की और अपनी उम्दा लेखनी से सैकड़ों हिंदी गीतों को अमरत्व प्रदान किया.

उनका असली नाम असरार उल हसन खान था और उन्होंने छोटी उम्र से ही शायरी शुरू कर दी थी, शुरू में वो नासेह के नाम से शायरी करते थे. बाद में उन्होंने अपना नाम मजरूह रख लिया जिसका अर्थ होता है घायल. उनका जन्म उत्तर प्रदेश के सुल्तानपुर जिले में हुआ इस प्रकार वो मजरूह सुल्तानपुरी कहलाये. मजरूह सुल्तानपुरी केवल गीतकार नहीं, बल्कि एक महान विचारक, दार्शनिक और कमाल के शायर थे जिन्होंने अपने जादुई शब्दों से मानवीय संवेदनाओं का एक अनोखा संसार रचा.

मजरूह साहब का काव्य जीवन नज़्मों और ग़ज़लों से प्रारम्भ हुआ .प्रगतिशील लेखक संघ से जुड़े रहते हुए उन्होंने अपने क्रांतिकारी लेखन के माध्यम से समाज की सच्चाइयों और आम आदमी की पीड़ा को स्वर प्रदान किया . मजरूह सुल्तानपुरी का व्यक्तित्व विद्रोही भी था और मानवीय भी. वे केवल रोमांटिक गीतों के शायर नहीँ थे, बल्कि वे अपनी लेखनी से समाज और राजनीति पर तीखा प्रहार भी भी करते थे.अपने विचारों के कारण उन्हें एक बार जेल भी जाना पड़ा, पर उन्होंने कभी अपने आदर्शों से समझौता नहीं किया. उनकी रचनाओं में प्रगतिशील विचारधारा और मानवीय संवेदना का सुंदर समन्वय झलकता है.

बहुत कम लोग जानते हैं कि वे एक हकीम भी थे उन्होंने लखनऊ से यूनानी चिकित्सा की पढ़ाई की, लेकिन बाद में शायरी के शौक के कारण मेडिकल प्रैक्टिस छोड़ दी. 1945 में वो अपने उस्ताद जिगर मुरादाबादी के साथ मुशायरे में शामिल होने बम्बई आये,जहाँ फ़िल्म निर्माता एआर कारदार और संगीतकार नौशाद ने उन्हें सुना तो उनके मुरीद हो गए और अपनी फ़िल्म %शाहजहाँ% में गीत लिखने के लिए उन्हें आमंत्रित किया और फ़िल्म शाहजहाँ के लिए उनका लिखा, के एल सहगल का गाया गीत जब दिल ही टूट गया हम जी के क्या करेंगे% फ़िल्मी दुनिया में छा गया और मजरूह सुल्तानपुरी फ़िल्म जगत में स्थापित हो गए. ये गीत, के एल सहगल साहब को इतना पसंद था कि उन्होंने ये इच्छा प्रकट की थी कि जब उनका अंतिम संस्कार किया जाए तो %जब दिल ही टूट गया गीत बजाया जाए.

मजरूह सुल्तानपुरी ने अपने 50 से अधिक वर्षों के करियर में, 350 से अधिक फिल्मों के लिए 2000 से ज्यादा रूमानी और सदाबहार सुपरहिट गीत लिखे, शाहजहाँ, सुजाता, ममता, दस्तक, दोस्ती, तीसरी मंज़िल, पैइंग गेस्ट, तेरे घर के सामने, सीआईडी, नौ दो ग्यारह, चलती का नाम गाड़ी, साथी, इम्तिहान, कारवां, अभिमान, जैसी ओल्ड क्लासिक फिल्मों से लेकर नई पीढ़ी की फ़िल्मों क़यामत से क़यामत तक, जो जीता वही सिकंदर,अंदाज़ अपना अपना और यारा दिलदारा के उनके लिखे गीत आज भी संगीत प्रेमियों की जुबां पर हैं. उनके गीतों में शायरी की नफ़ासत, भाषा की सरलता और मानवीय भावनाओं के साथ साथ प्रेम, दर्द, आशा और सौंदर्य का अद्भुत सम्मिश्रण है ।

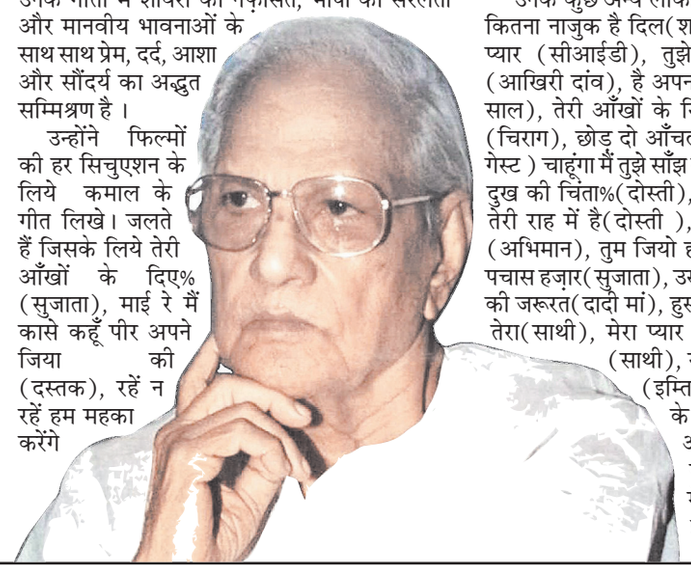

उन्होंने फिल्मों की हर सिचुएशन के लिये कमाल के गीत लिखे। जलते हैं जिसके लिये तेरी आँखों के दिए% (सुजाता), माई रे मैं कासे कहूँ पीर अपने जिया की (दस्तक), रहें न रहें हम महका करेंगे (ममता), हम हैं मता ए कूचा ए बाज़ार की तरह(दस्तक) जैसे संजीदा गीतों से लेकर से लेकर पिया तू अब तो आ जा(कारवाँ) जैसे कैबरे गीत तक हर दौर, हर प्रकार की सिचुएशन और हर मूड के लिये उम्दा गीत लिखे, यूँ तो उन्होंने चित्र गुप्त, एस डी बर्मन, रोशन, नौशाद, मदन मोहन,आर डी बर्मन, लक्ष्मीकांत प्यारेलाल आदि सभी के साथ उम्दा काम किया परन्तु विशेषकर सचिन देव बर्मन के साथ उन्होंने कमाल के गीत रचे हैं .

उनके कुछ अन्य लोकप्रिय गीत,गम दिए मुस्तकिल कितना नाजुक है दिल(शाहज़हां),ले के पहला पहला प्यार (सीआईडी), तुझे क्या बताऊँ मैं दिलरुबा (आखिरी दांव), है अपना दिल तो आवारा(सोलवाँ साल), तेरी आँखों के सिवा दुनिया में रखा क्या है (चिराग), छोड़ दो आँचल ज़माना क्या कहेगा(पेइंग गेस्ट) चाहूंगा मैं तुझे साँझ सवेरे% (दोस्ती), राही मनवा दुख की चिंता%(दोस्ती), मेरा तो जो भी कदम है वो तेरी राह में है(दोस्ती), तेरे मेरे मिलन की ये रैना (अभिमान), तुम जियो हज़ारो साल साल के दिन हों पचास हज़ार(सुजाता), उसको नहीं देखा हमने मगर इस की जरूरत(दादी मां), हुस्ने जाना इधर आ आईना हूं मैं तेरा(साथी), मेरा प्यार भी तू है ये बहार भी तू है (साथी), रुक जाना नहीं तू कहीं हार के (इम्तिहान), जा रे कारे बदरा बलम के पास (धरती कहे पुकार के), ओ मेरे दिल के चैन(मेरे जीवन साथी), ओ हंसिनी मेरी हंसिनी% (जहरीला इंसान), क्या हुआ तेरा वादा (हम किसी से कम नहीं), इक दिन बिक जायेगा माटी के मोल (धरम करम), चुरा लिया है तुमने जो दिल को (यादों की बारात), पापा कहते हैं बड़ा नाम करेगा (क़यामत से कयामत तक), पहला नशा पहला खुमार (जो जीता वही सिकंदर), ऐ काश कि हम होश में अब आने ना पाएं (कभी हाँ कभी ना) आदि हैं.

वर्ष 1965 में फ़िल्म दोस्ती के लिये उन्हें फिल्म फेयर पुरस्कार और 1993 में फ़िल्मी गीतों को साहित्यिक ऊँचाई प्रदान करने के लिये फ़िल्म जगत के सर्वोच्च सम्मान, दादा साहब फाल्के पुरस्कार से सम्मानित किया गया. उनके गीत अमर हैं, उनके लिखे कालजयी गीत समय की सीमाओं को पार करते हुए आज भी हमारे दिलों में गूंजते हैं और आने वाली पीढ़ियों को भी प्रेरित करते रहेंगे. किसी ने सच ही कहा है — मजरूह गए नहीं, वे हर उस धुन में जिन्दा हैं जो दिल को छू जाती है.

आज की बात उनके एक प्रसिद्ध शेर से समाप्त करते हैं,

मैं अकेला ही चला था जानिब ए मंज़िल मगर,
लोग साथ आते गए और कारवां बनता गया

अगले हफ्ते फिर मुलाक़ात होगी तब तक फ़िल्म दस्तक का लता मंगेशकर का गाया, मजरूह साहब का लिखा मेरा मनपसंद गीत हम हैं मता-ए-कूचा-ए-बाज़ार की तरह सुनिए और फिल्मी गीतों में उच्च स्तरीय शायरी को सुनने के अद्भुत अहसास को अनुभव कीजिये.....

हम हैं मता-ए-कूचा-ओ-बाज़ार की तरह
उठती है हर निगाह ख़रीदार की तरह
वो तो हैं कहीं और मगर दिल के आस पास
फिरती है कोई शय निगाह-ए-यार की तरह
मजरूह लिख रहे हैं वो अहल-ए-वफ़ा का नाम
हम भी खड़े हुए हैं गुनहगार की तरह

नीलकमल और सनी लियोनी फिर हुए एक साथ

म्यूज़िक सेंसेशन नीलकमल सिंह एक बार फिर बॉलीवुड की ग्लैमर आइकन सनी लियोनी के साथ अपने बहुप्रतीक्षित नए सिंगल 'चेहरा तेरा' में नज़र आ रहे हैं. नीलकमल सिंह और सनी लियोनी की धमाकेदार कोलैबोरेशन 'लड़की दीवानी', जिसने 100 मिलियन से ज़्यादा व्यूज़ हासिल किए थे, के बाद यह

पावरहाउस जोड़ी एक बार फिर स्क्रीन पर आग लगाने के लिए लौट आई है.

टी-सीरीज़ द्वारा प्रस्तुत, 'चेहरा तेरा' साल का सबसे ज़्यादा एडिक्टिव डांस ट्रैक बनने का वादा करता है, जिसमें धड़कते हुए रिदम्स, शानदार विज़ुअल्स और नज़रअंदाज़ न की जा सकने वाली केमिस्ट्री का जबरदस्त संगम है.

एक हाई-एनर्जी डांस नंबर, जिसमें बेहद कैची हुक है, 'चेहरा तेरा' को अशुतोष तिवारी ने लिखा है और इसका संगीत आर. जे. कांग ने तैयार किया है. यह गाना देशभर की प्लेलिस्ट्स और खचाखच भरे डांस फ्लोर्स पर छाने के लिए खास तौर पर तैयार किया गया है.

राहुल शेट्टी द्वारा निर्देशित यह विज़ुअली स्टनिंग म्यूज़िक वीडियो नीलकमल के ट्रांसफॉर्मेशन को दर्शाता है - एक नर्डी, आम शख्सियत से लेकर एक कॉन्फिडेंट पार्टी किंग बनने तक का सफ़र, जो रंग-बिरंगे और एनर्जेटिक सीक्वेंसेज़ की बैकड्रॉप में दिखाया गया है. सनी लियोनी अपनी सिग्नेचर ग्लैमर और इलेक्ट्रिफ़ाइंग डांस मूव्स के साथ स्क्रीन पर पूरी तरह छा जाती हैं, जिससे यह ट्रैक ब्लॉकबस्टर स्टेटस तक पहुँच जाता है.

मनीष ने सालगिरह पर पत्नी के नाम लिखा भावुक नोट

अभिनेता और लोकप्रिय टेलीविजन होस्ट मनीष पॉल ने शादी की 19वीं सालगिरह पर पत्नी संयुक्ता पॉल के नाम भावुक नोट लिखा है.

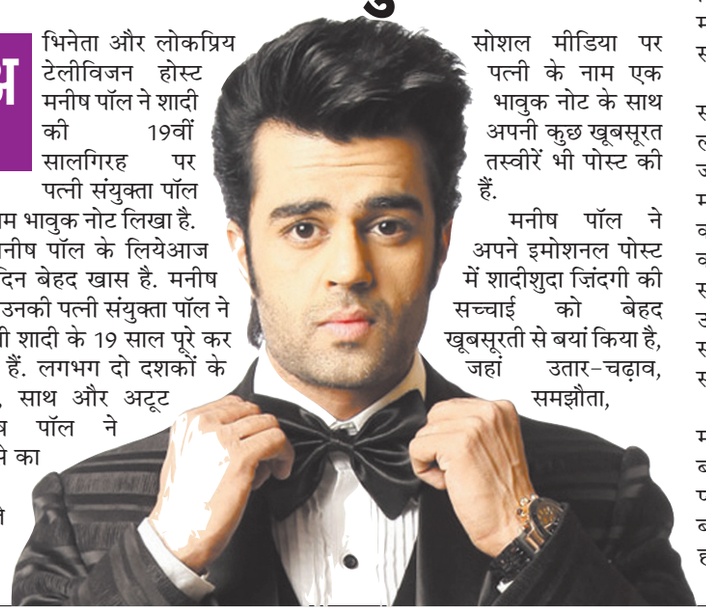

मनीष पॉल के लियेआज का दिन बेहद खास है. मनीष और उनकी पत्नी संयुक्ता पॉल ने अपनी शादी के 19 साल पूरे कर लिए हैं. लगभग दो दशकों के प्यार, साथ और अटूट मनीष पॉल ने भरोसे का जश्न मनाते हुए सोशल मीडिया पर पत्नी के नाम एक भावुक नोट के साथ अपनी कुछ खूबसूरत तस्वीरें भी पोस्ट की हैं.

मनीष पॉल ने अपने इमोशनल पोस्ट में शादीशुदा ज़िंदगी की सच्चाई को बेहद खूबसूरती से बयां किया है, जहां उतार-चढ़ाव, समझौता, दोस्ती और बिना शर्त साथ निभाने की भावना शामिल होती है. मनीष का यह पोस्ट फैंस के दिल को छू गया, जिसके बाद कमेंट सेक्शन में बधाइयों, प्यार और तारीफों की बाढ़ आ गई. कई लोगों ने एंटरटेनमेंट इंडस्ट्री की भागदौड़ भरी ज़िंदगी के बावजूद अपने रिश्ते को मज़बूती से निभाने के लिए इस जोड़ी की सराहना भी की है.

मनीष और संयुक्ता पॉल को लंबे समय से उनकी सादगी भरे रिश्ते और लाइमलाइट से दूर बैलेंस्ड पर्सनल लाइफ जीने के लिए जाना जाता रहा है. हालांकि मनीष कई बार सार्वजनिक रूप से यह कह भी चुके हैं कि उनकी ज़िंदगी और करियर में संयुक्ता उनका सबसे बड़ा सहारा और ताक़त रही हैं. चाहे प्रोफेशनल उतार-चढ़ाव हो या निजी चुनौतियां, संयुक्ता हमेशा उनके साथ एक मजबूत स्तंभ की तरह खड़ी रही हैं.

शादी के 19 साल पूरे करने पर मनीष और संयुक्ता की यह यात्रा इस बात की खूबसूरत मिसाल है कि सच्चा प्यार समय के साथ और गहरा होता है, बस ज़रूरत होती है धैर्य, साझेदारी और हर हाल में एक-दूसरे का हाथ थामे रखने की है.

टेलीविजन हलचल

योगेश त्रिपाठी ने बताया कैसे शुरू हुआ अभिनय का सफर

एण्डटीवी के शो 'हप्पू की उलटन पलटन' में दरोगा हप्पू सिंह के रूप में अपनी शानदार कॉमिक टाइमिंग और प्रभावशाली अभिनय के लिए मशहूर योगेश त्रिपाठी ने अपने करियर की शुरुआत एक अनोखे और साहसी फैसले के साथ की थी. अकादमिक पृष्ठभूमि वाले परिवार से ताल्लुक रखने वाले योगेश पर पारंपरिक और सुरक्षित करियर चुनने का दबाव था. लेकिन अभिनय की दुनिया को जानने की जिज्ञासा ने उन्हें ऐसा कदम उठाने के लिए प्रेरित किया जिसने उनके जीवन की दिशा ही बदल दी. उस दौर को याद करते हुए योगेश त्रिपाठी ने कहा, 'मैं ऐसे परिवार से आता हूं जहां पढ़ाई को सबसे ज्यादा अहमियत दी जाती थी. सभी चाहते थे कि मैं कोई सुरक्षित और पारंपरिक करियर चुनूं. जब मैंने अपने पिता से कहा कि मैं रेलवे की परीक्षा देने जा रहा हूं, तब असल में मैं उन्हें यह बताने की हिम्मत नहीं जुटा पा रहा था कि मैं अभिनय की दुनिया में जाना चाहता हूं. मुझे डर था कि इससे उन्हें दुख और चिंता होगी. मुंबई आना मेरे लिए बहुत मुश्किल भरा रहा. मैंने छोटे-मोटे काम किए, आर्थिक तंगी झेली और कई बार खुद पर सवाल भी उठाए. लेकिन दिल के किसी कोने में यह विश्वास था कि मुझे अपने सपने को एक मौका ज़रूर देना चाहिए. बचपन में जब मुंबई जाने वाली ट्रेनें देखता था, तो मन में एक अलग ही आकर्षण होता था. मुंबई मुझे सपनों और रोशनी का शहर लगता था. मैं ट्रेन को छूकर चुपचाप दुआ करता था कि एक दिन यह मुझे वहां ले जाए. वही बचपन का सपना सालों बाद सच हुआ और जब मैं पहली बार मुंबई की ट्रेन में बैठा, तो लगा जैसे किस्मत ने एक चक्कर पूरा कर लिया हो. जो एक छोटी-सी इच्छा थी, वही मेरी हकीकत बन गई.'

पंकज त्रिपाठी-मृदुला का सपना हुआ साकार

'लाइलाज' 25वें भारत रंग महोत्सव के लिए चयनित

बॉलीवुड अभिनेता पंकज त्रिपाठी और उनकी पत्नी मृदुला की पहली थिएटर प्रोडक्शन लाइलाज को भारत के सबसे बड़े और प्रतिष्ठित रंगमंच महोत्सव भारत रंग महोत्सव के लिए चुना गया है. यह महोत्सव नेशनल स्कूल ऑफ ड्रामा (एनएसडी), दिल्ली द्वारा आयोजित किया जाता है. अपने 25वें वर्ष में प्रवेश कर चुका यह महोत्सव जनवरी के आखिरी हफ्ते से फरवरी तक आयोजित होगा, जिसमें भारत और दुनिया भर के प्रसिद्ध नाट्य मंचन शामिल होंगे.

लाइलाज एक म्यूज़िकल कॉमेडी नाटक है, जिसे फैज़ मोहम्मद खान ने लिखा और निर्देशित किया है. यह नाटक पंकज और मृदुला के थिएटर बैनर रूपकथा रंगमंच के तहत प्रस्तुत किया गया है. इस नाटक का खास महत्व इसलिए भी है क्योंकि यह पंकज त्रिपाठी की करीब एक दशक बाद रंगमंच पर वापसी को दर्शाता है. इसके साथ ही, उनकी बेटी आशी का इस नाटक से रंगमंच अभिनय की दुनिया में कदम रखा था, जिससे यह नाटक पूरे परिवार के लिए बेहद खास बन जाता है. लाइलाज का भारत रंग महोत्सव में चयन रूपकथा रंगमंच के लिए एक बड़ी उपलब्धि है, क्योंकि यह पहली बार है जब उनकी पहली प्रस्तुति को इतने बड़े राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय मंच पर जगह मिली है.

पंकज त्रिपाठी ने कहा, 'भारत रंग महोत्सव भारतीय रंगमंच की दुनिया में एक बहुत खास स्थान रखता है और इसके 25वें संस्करण में लाइलाज का चयन होना मेरे लिए बेहद विनम्र करने वाला अनुभव है. थिएटर ही मेरी जड़ें हैं और एनएसडी हमेशा अनुशासन, ईमानदारी और कला के प्रति सम्मान का प्रतीक रहा है.

रूपकथा रंगमंच की पहली प्रस्तुति को ऐसे मंच पर लाना मेरे लिए एक 'फुल सर्कल' पल जैसा है.

लाइलाज एक सरल, संगीत से भरी और दिल से जुड़ी कहानी है, जिसके पीछे कई लोगों की मेहनत और थिएटर के प्रति सच्चा विश्वास है. अपनी बेटी आशी के साथ इस मंच को साझा करना मेरे लिए हमेशा यादगार रहेगा. मैं इसे सिर्फ एक प्रस्तुति नहीं, बल्कि उस थिएटर समुदाय को समर्पण मानता हूं जिसने मुझे गढ़ा है.

फिल्म 'तू या मैं' में नजर आयेंगी पारुल गुलाटी

बॉलीवुड अभिनेत्री पारुल गुलाटी,आनंद एल राय की फिल्म 'तू या मैं' में दमदार किरदार में नजर आयेंगी. पारुल गुलाटी इस फिल्म में शानाया की करीबी दोस्त और मैनेजर लायरा के रूप में नजर आएंगी. यह किरदार पहले ही चर्चित डायलॉग 'तू येडि हो गई है क्या रे बच्ची...' की वजह से दर्शकों के बीच चर्चा में है. कहानी में का रोल बेहद महत्वपूर्ण है, जो फिल्म में भावनात्मक गहराई, अपनापन और वास्तविकता जोड़ता है.

अपने किरदार और आनंद एल राय की अनोखी 'क्रिएचर वर्ल्ड' का हिस्सा बनने को लेकर पारुल ने भावुक अंदाज़ में अपने अनुभव साझा किए. उन्होंने कहा, 'मैं सच में बहुत खुश हूं और अभी भी इसे पूरी तरह महसूस करने की कोशिश कर रही हूं. पारुल शानाया की दोस्त और मैनेजर है.वह उसका साथ देती है, सवाल उठाती है, उसे सपोर्ट करती है और बेहद रियल है. सबसे ज्यादा खुशी इस बात की है कि वह सिर्फ एक साइड कैरेक्टर नहीं है, बल्कि कहानी की एक मजबूत इमोशनल एंकर है. और उस आइकॉनिक डायलॉग का हिस्सा बनना अपने आप में काफी सरीयल लगता है.

पारुल ने कहा, 'एक कलाकार और एक क्रिएटर के तौर पर यह मेरे लिए अब तक का सबसे बेहतरीन कोलैबोरेशन है. आनंद एल राय की दुनिया बहुत थिएट्रिकल, लेयर्ड और भावनाओं से भरपूर है.यह वही तरह का सिनेमा है जिसे मैं हमेशा से पसंद करती आई हूं और जिसका हिस्सा बनना चाहती थी. मैं खुद को बार-बार पिंच कर रही हूं क्योंकि ऐसा लगता है जैसे यह जिंदगी में एक बार मिलने वाला मौका है.

जी5 ने जारी किया 'शबद - रीत और रिवाज़' का ट्रेलर

अमित गुप्ता के निर्देशन में बनी ज़ी5 ओरिजिनल सीरीज़ का प्रीमियर 6 फ़रवरी को किया जाएगा, जिसमें मिहिर आहूजा और सुविंदर विक्की मुख्य भूमिकाओं में हैं- यह छह एपिसोड की भावनात्मक ड्रामा सीरीज़ है, जो पिता-पुत्र के रिश्ते की नाजुक भावनाओं, पीढ़ियों की अपेक्षाओं और अपनी अलग पहचान बनाने के साहस को दर्शाती है. रस्क मीडिया द्वारा निर्मित और अमीत गुप्ता के निर्देशन में बनी इस सीरीज़ में मिहिर आहूजा और सुविंदर विक्की मुख्य भूमिकाओं में नज़र आएंगे. इस सीरीज़ का प्रीमियर 6 फ़रवरी को, विशेष रूप से हिंदी जी5 पर किया जाएगा. पंजाब की भावनात्मक पृष्ठभूमि पर आधारित शबद 16 वर्षीय घुप्पी सिंह की कहानी है, जो हकलाने की समस्या के साथ जीता है और ऐसे सपने देखता है जो उसके परिवार की गहरी परंपराओं से बिल्कुल अलग हैं. उसके पिता हरमिंदर सिंह, जो एक सम्मानित रागी गायक हैं और साथ ही कॉरपोरेट दुनिया से भी जुड़े हैं, चाहते हैं कि घुप्पी भक्ति संगीत की इस पवित्र परंपरा को आगे बढ़ाए. लेकिन घुप्पी को अपनी असली आज़ादी और खुद को व्यक्त करने का सच्चा एहसास भजनों में नहीं, बल्कि फुटबॉल के मैदान पर मिलता है. जैसे-जैसे पीढ़ियों के बीच तनाव बढ़ता है और भावनात्मक दूरियां गहरी होती जाती हैं, शबद विरासत और आकांक्षाओं, परंपरा और व्यक्तिगत पहचान के बीच के टकराव को बेहद संवेदनशीलता से दिखाता है. यह सीरीज़ एक अहम सवाल उठाती है- क्या विरासत हमें जन्म से मिलती है, या हम खुद उसे चुनते हैं? आस्था, डर, प्रेम और महत्वाकांक्षा के इस टकराव में पिता और पुत्र दोनों को अपनी सबसे गहरी कमजोरियों का सामना करना पड़ता है. अंततः वे समझते हैं कि साथ-साथ जीने की राह अधिकार से नहीं, बल्कि सहानुभूति और समझ से निकलती है. अपने किरदार के बारे में बात करते हुए मिहिर आहूजा ने कहा, घुप्पी उन सबसे संवेदनशील और सच्चे किरदारों में से एक है, जिन्हें मैंने निभाया है. उसका हकलाना सिर्फ बोलने की समस्या नहीं है, बल्कि उन सभी भावनाओं को दिखाता है जिन्हें वह व्यक्त नहीं कर पाता- डर, चाहत, महत्वाकांक्षा और स्वीकार किए जाने की ज़रूरत . शबद हर युवा की ज़िंदगी के उस अहम मोड़ को दिखाता है, जब इंसान एक अच्छा बच्चा बनने और खुद के प्रति सच्चा रहने के बीच उलझ जाता है.

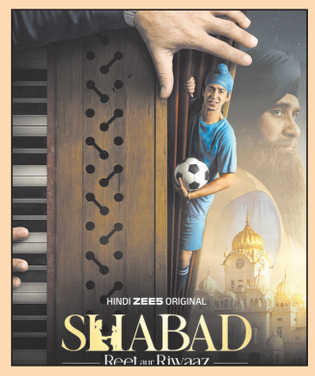

सुमन घोष ने की 'फैमिलीवाला' की शूटिंग शुरू

फिल्मकार सुमन घोष ने अपनी अगली फीचर फिल्म 'फैमिलीवाला' की शूटिंग शुरू कर दी है. यह फिल्म उनके लिए विंडोज प्रोडक्शंस के साथ पहला सहयोग है, वह भी ऐसे समय में, जब यह प्रतिष्ठित प्रोडक्शन हाउस फिल्म इंडस्ट्री में अपने 25 शानदार वर्षों का जश्न मना रहा है. कॉमेडी-फैमिली ड्रामा 'फैमिलीवाला' को माया लीला फिल्म्स के द्वारा सह-निर्मित किया जा रहा है और यह रोज़मर्रा के पारिवारिक जीवन में रचे-बसे हास्य और भावनाओं का सजीव चित्रण प्रस्तुत करने का वादा करती है.

एटली ने दीपिका को बताया 'लकी चार्म'

जानेमाने निर्देशक एटली ने अभिनेत्री दीपिका पादुकोण को अपना 'लकी चार्म' बताया है. एटली की अपकमिंग फिल्म, जिसे फिलहाल एए22एक्सए6 नाम दिया गया है, अपने ऑफिशियल ऐलान के बाद से ही जबरदस्त चर्चा में बनी हुई है. लेकिन जैसे ही एक दमदार अनाउंसमेंट एसेट के जरिए दीपिका पादुकोण के इस प्रोजेक्ट से जुड़ने की खबर सामने आई, फिल्म को लेकर बातचीत और भी तेज हो गई. इस खुलासे के साथ ही सोशल मीडिया पर हलचल मच गई और एए22एक्सए6 हाल के समय की सबसे ज्यादा चर्चित फिल्मों में शामिल हो गई. एटली की अब तक की सबसे बड़ी फिल्म बताई जा रही इस प्रोजेक्ट में अल्लू अर्जुन भी नजर आएंगे, जिससे फिल्म का स्केल और दर्शकों की एक्साइटमेंट और बढ़ गई है.

जवान जैसी बड़ी ब्लॉकबस्टर देने वाले डायरेक्टर एटली एक बार फिर दीपिका पादुकोण के साथ काम कर रहे हैं, जो दोनों की दूसरी फिल्म होगी. एक एक्सक्लूसिव बातचीत में एटली ने इस प्रोजेक्ट पर खुलकर बात की और दीपिका की जमकर तारीफ करते हुए उन्हें अपनी 'लकी चार्म' बताया.

एटली ने इस कोलैबोरेशन को लेकर खुशी जताते हुए कहा 'हां, वह मेरी लकी चार्म हैं,' 'दीपिका के साथ यह मेरी दूसरी फिल्म है और उनके साथ काम करना शानदार रहता है. वह वाकई कमाल की हैं.' इस प्रोजेक्ट को लेकर उत्सुकता और बढ़ गई है क्योंकि एटली ने इशारा किया है कि इस फिल्म में दर्शक दीपिका पादुकोण का एक बिल्कुल नया रूप देखेंगे. डायरेक्टर ने बताया कि एए22एक्सए6, मां बनने के बाद दीपिका की पहली फिल्म होगी, जिससे यह कोलैबोरेशन और भी खास बन जाता है.